

आदर्श-प्रश्नपत्रम् - 2021-22

द्वितीयं सत्रम्

कक्षा - दशमी

संस्कृतम् (कोड-122)

समयः – होराद्वयम्

सम्पूर्णाङ्काः – 40

सामान्यनिर्देशाः –

1. कृपया सम्यक्तया परीक्षणं कुर्वन्तु यत् अस्मिन् प्रश्नपत्रे 7 पृष्ठानि मुद्रितानि सन्ति ।
2. कृपया सम्यक्तया परीक्षणं कुर्वन्तु यत् अस्मिन् प्रश्नपत्रे 9 प्रश्नाः सन्ति ।
3. अस्य प्रश्नपत्रस्य पठनाय 20 निमेषाः निर्धारिताः सन्ति । अस्मिन् अवधौ केवलं प्रश्नपत्रं पठनीयम् उत्तरपुस्तिकायां च किमपि न लेखनीयम् ।
4. उत्तरलेखनात् पूर्वं प्रश्नस्य क्रमाङ्कः अवश्यं लेखनीयः
5. प्रश्नसङ्ख्या प्रश्नपत्रानुसारम् एव लेखनीया ।
6. सर्वेषां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लेखनीयानि ।
7. प्रश्नानां निर्देशाः ध्यानेन अवश्यं पठनीयाः ।

| अपठितावबोधनम् | |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------|
| <p>1. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –</p> <p>एकदा सर्वे पक्षिणः मिलित्वा उलूकं स्वाधिपतिं विधातुं विचारितवन्तः। तस्य अभिषेकवेलापि तैः निश्चिता। ततो यदा अभिषेकोत्सवः प्रारब्धः तदैव कश्चित् वायसः तत्रागच्छत्। उलूकस्याभिषेक-समाचारं श्रुत्वा सोऽवदत् -“भोः! किं विचार्य भवद्भिः एषः दिवान्धः उलूकः राजपदे प्रतिष्ठापयितुं निश्चितः? यस्य देशस्य राजा एवम् अन्धो भविष्यति तस्य प्रजा अपि तथैव भविष्यति। किं न श्रुतं भवद्भिः - यथा राजा तथा प्रजा इति।” ततः सर्वेऽपि तस्य परामर्शं मत्वा यत्र तत्र प्रस्थिताः। कथैषा पुरातनी परम् अस्याः तात्पर्यं तु अद्यापि अक्षरशः सत्यम्। लोकतान्त्रिकदेशेषु यथा राष्ट्रप्रमुखः सर्वकारो वा तथा तस्य देशस्य स्थितिः भवति। अतः राजपदे योग्यजनः एव प्रतिष्ठापयितव्यः। सम्प्रति यथा नेतारः तथा जनाः।</p> <p>अ. एकपदेन उत्तरत – (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(i) पक्षिणः कं स्वाधिपतिं विधातुम् उद्यताः?</p> <p>(ii) यदा अभिषेकोत्सवः प्रारब्धः तदा कः तत्रागच्छत्?</p> <p>(iii) राजपदे कीदृशः जनः प्रतिष्ठापयितव्यः?</p> <p>आ. पूर्णवाक्येन लिखत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(i) वायसः उलूकस्य राजपदे प्रतिष्ठापनविषये किम् अवदत्?</p> <p>(ii) लोकतान्त्रिकदेशेषु देशस्य कीदृशी स्थितिः भवति?</p> <p>(iii) वायसः तत्र कदा आगच्छत्?</p> <p>इ. अस्य अनुच्छेदस्य कृते उपयुक्तं शीर्षकं संस्कृतेन लिखत।</p> <p>ई. यथानिर्देशम् उत्तरत - (केवलं प्रश्नत्रयम्)</p> <p>(i) ‘काकः’ इत्यस्य किं समानार्थकपदं गद्यांशे प्रयुक्तम्?</p> <p>(ii) ‘आगच्छत्’ इति क्रियायाः कर्तृपदं गद्यांशात् चित्वा लिखत।</p> <p>(iii) ‘नवीना’ इत्यस्य विलोमपदं गद्यांशात् चित्वा लिखत।</p> <p>(iv) ‘दिवान्धः उलूकः’ इत्यनयोः पदयोः विशेषणपदं किम्?</p> | <p>10</p> <p>1x2=2</p> <p>2x2=4</p> <p>1</p> <p>1x3=3</p> |
| रचनात्मकं कार्यम् | |
| <p>2. भवान् हार्दिकः। भवान् प्रतिदिनं च 'चाऊमीन-बर्गर' इत्यादिकं त्वरित-भोजनं खादति। स्वस्थभोजनस्य महत्त्वं वर्णयन्त्या अग्रजया भवन्तं प्रति लिखिते पत्रे रिक्तस्थानानि पूरयित्वा पत्रं च पुनः उत्तरपुस्तिकायां लिखतु।</p> | <p>½x10=5</p> |

गुरुग्रामात्,
दिनाङ्कः

प्रिय हार्दिक !

(i)..... ।

मया मात्रा लिखितं पत्रं प्राप्तम् । तेन (ii) मया ज्ञातं यत् भवान् सन्तुलितभोजनं न (iii), प्रतिदिनं च 'चाऊमीन-बर्गर' इति खादति । (iv).....भोजनं स्वास्थ्याय सम्यक् न अस्ति । यदा कदा तु अस्य (v)..... कर्तुं शक्यते, परं प्रतिदिनं (vi)..... सेवनं स्वास्थ्याय हानिकरम् ।

स्वास्थ्याय तु सन्तुलितभोजनम् एव (vii) यतः 'स्वस्थशरीरे एव स्वस्थमनसः विकासः ' भवति । अतः भवान् त्वरितभोजनस्य सेवनं (viii) करोतु । स्वास्थ्यवर्धकं भोजनमेव खादतु । अनेन भवान् कदापि (ix) न भविष्यति । भवान् स्वस्वास्थ्यविषये जागरूकः तिष्ठतु इति मे अनुरोधः ।

भवदीया अग्रजा (x) ।

हिमांशी

मञ्जूषा

त्वरितभोजनस्य, त्यजतु, पत्रेण, सेवनम्, ईदृशम्,
ग्रहीतव्यम्, स्नेहाशिषः, सेवते, रुग्णः, अग्रजा

3. प्रदत्तं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया पञ्च वाक्यानि संस्कृतेन लिखत -

1×5=5



| | | |
|----|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------|
| | <p style="text-align: center;">मञ्जूषा –</p> <p style="text-align: center;">शिरस्त्राणस्य, दण्डशुल्कम्, आरक्षकः, सुरक्षायै, धारयित्वा, दुर्घटनायै, निर्बाधम्, आमन्नणम्, शुल्कप्राप्तिपत्रम्, मोटरसाइकिलचालकः, आत्मरक्षायै</p> <p style="text-align: center;">अथवा</p> <p style="text-align: center;">मञ्जूषाप्रदत्तशब्दानां साहाय्येन निम्नलिखितं विषयम् अधिकृत्य न्यूनातिन्यूनं पञ्चभिः संस्कृतवाक्यैः एकम् अनुच्छेदं लिखत -</p> <p style="text-align: center;">“शाक-आपणः”</p> <p style="text-align: center;">मञ्जूषा –</p> <p style="text-align: center;">विविधानि शाकानि, पलाण्डुः, आलुकम्, कारवेल्लम्, मरीचिका, वृन्ताकम्, वार्तिकी इत्यादीनि, क्रेतारः, विक्रेतारः, जनसम्मर्दः, धनपत्राणि, कोलाहलम्, उच्चैः, आह्वयन्ति, पङ्कयुक्ता भूमिः, अस्वच्छता, अवकरः, मक्षिकाः, महार्घम्, फलानि ।</p> | 1×5=5 |
| 4. | <p style="text-align: center;">अधोलिखितानि वाक्यानि संस्कृतभाषया अनुद्य लिखत – (केवलं वाक्यपञ्चकम्)</p> <p>(i) घर के बाहर दो बच्चे खेल रहे हैं। Two children are playing outside the house.</p> <p>(ii) ‘मेघदूतम्’ कालिदास की प्रसिद्ध रचना है। 'Meghdootam' is a famous work of Kalidas.</p> <p>(iii) तुम सब कल क्यों नहीं आए थे? Why didn't you all come yesterday?</p> <p>(iv) वे दोनों वहाँ जाएँ। Both should go there.</p> <p>(v) परिश्रमी जन सदैव सफल होता है। Laborious people always succeed.</p> <p>(vi) सभी छात्र निश्चय ही सफल होंगे। All the students will surely be successful.</p> <p>(vii) उस लड़की ने पुस्तक पढ़ी। That girl read the book.</p> | 1×5=5 |
| | पठितावबोधनम् | |
| 5. | <p style="text-align: center;">अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –</p> <p>कश्चन निर्धनो जनः भूरि परिश्रम्य किञ्चिद् वित्तमुपार्जितवान् । तेन वित्तेन स्वपुत्रम् एकस्मिन् महाविद्यालये प्रवेशं दापयितुं सफलो जातः । तत्तनयः तत्रैव छात्रावासे निवसन् अध्ययने संलग्नः समभूत् । एकदा स पिता तनूजस्य रुग्णतामाकर्ण्य व्याकुलो जातः, पुत्रं द्रष्टुं च प्रस्थितः । परमर्थकार्श्येन पीडितः स बसयानं विहाय पदातिरेव प्राचलत् ।</p> | 3 |

| | | |
|-----------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------|
| | <p>पदातिक्रमेण सञ्चलन् सायं समयेऽप्यसौ गन्तव्याद् दूरे आसीत् । 'निशान्धकारे प्रसृते विजने प्रदेशे पदयात्रा न शुभावहा', एवं विचार्य स पार्श्वस्थिते ग्रामे रात्रिनिवासं कर्तुं कञ्चिद् गृहस्थमुपागतः । करुणापरो गृही तस्मै आश्रयं प्रायच्छत् ।</p> <p>अ. एकपदेन उत्तरत । (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(क) कः भूरि परिश्रम्य किञ्चिद् वित्तमुपार्जितवान्?</p> <p>(ख) करुणापरो गृही तस्मै किं प्रायच्छत्?</p> <p>(ग) निर्धनस्य पुत्रः कुत्र निवसन् अध्ययने संलग्नः समभूत्?</p> <p>आ. पूर्णवाक्येन उत्तरत । (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(क) पिता कथं व्याकुलो जातः?</p> <p>(ख) निर्धनः जनः किमर्थं पदातिरेव प्राचलत्?</p> <p>(ग) जनः किं विचार्य पार्श्वस्थिते ग्रामे रात्रिनिवासं कर्तुं कञ्चिद् गृहस्थमुपागतः?</p> | <p>$\frac{1}{2} \times 2 = 1$</p> <p>$(1 \times 2 = 2)$</p> |
| <p>6.</p> | <p>अधोलिखितं पद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत -</p> <p>मृगा मृगैः सङ्गमनुव्रजन्ति, गावश्च गोभिः तुरगास्तुरङ्गैः । मूर्खाश्च मूर्खैः सुधियः सुधीभिः, समान-शील-व्यसनेषु सख्यम् ॥</p> <p>अ. एकपदेन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(क) के मृगैः सह अनुव्रजन्ति?</p> <p>(ख) सुधीभिः सह के तिष्ठन्ति?</p> <p>(ग) गावः काभिः सह अनुव्रजन्ति?</p> <p>आ. पूर्णवाक्येन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(क) केषु सख्यं भवति?</p> <p>(ख) तुरगाः कैः सह अनुव्रजन्ति?</p> <p>(ग) मूर्खाः सुधियश्च कैः सह अनुव्रजन्ति?</p> | <p>3</p> <p>$\frac{1}{2} \times 2 = 1$</p> <p>$1 \times 2 = 2$</p> |
| <p>7.</p> | <p>अधोलिखितं नाट्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत -</p> <p>काकः - आम् सत्यं कथितं त्वया- वस्तुतः वनराजः भवितुं तु अहमेव योग्यः ।</p> <p>पिकः - (उपहसन्) कथं त्वं योग्यः वनराजः भवितुं, यत्र तत्र का-का इति कर्कशध्वनिना वातावरणमाकुलीकरोषि । न रूपं, न ध्वनिरस्ति । कृष्णवर्णं मेध्यामेध्यभक्षकं त्वां कथं वनराजं मन्यामहे वयम् ?</p> <p>काकः - अरे! अरे! किं जल्पसि? यदि अहं कृष्णवर्णः तर्हि त्वं किं गौराङ्गः? अपि च विस्मर्यते किं यत् मम सत्यप्रियता तु जनानां कृते उदाहरणस्वरूपा-'अनृतं</p> | <p>3</p> |

| | | |
|-----------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------|
| | <p>वदसि चेत् काकः दशेत्' - इति प्रकारेण । अस्माकं परिश्रमः ऐक्यं च विश्वप्रथितम् । अपि च काकचेष्टः विद्यार्थी एव आदर्शच्छात्रः मन्यते ।</p> <p>पिकः – अलम् अलम् अतिविकथनेन । किं विस्मर्यते यत्-</p> <p>काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेदः पिककाकयोः ।</p> <p>वसन्तसमये प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः ॥</p> <p>काकः - अरे परभृत्! अहं यदि तव सन्ततिं न पालयामि तर्हि कुत्र स्युः पिकाः? अतः अहं एव करुणापरः पक्षिसम्राट् काकः ।</p> <p>अ. एकपदेन उत्तरत । (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(क) पिककाकयोः भेदः कदा ज्ञायते?</p> <p>(ख) कः कर्कशध्वनिना वातावरणम् आकुलीकरोति?</p> <p>(ग) कीदृशः विद्यार्थी आदर्शच्छात्रः मन्यते?</p> <p>आ. पूर्णवाक्येन उत्तरत । (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(क) अन्ते काकः पिकं प्रति किं वदति?</p> <p>(ख) काकः कदा दशेत्?</p> <p>(ग) कः आत्मानं वनराजः भवितुं योग्यः चिन्तयति?</p> | <p>$\frac{1}{2} \times 2 = 1$</p> <p>$1 \times 2 = 2$</p> |
| <p>8.</p> | <p>मञ्जूषातः समुचितपदानि चित्वा अधोलिखित-श्लोकस्य अन्वयं पूर्यत –</p> <p>पिता यच्छति पुत्राय बाल्ये विद्याधनं महत् । पिताऽस्य किं तपस्तेपे इत्युक्तिस्तत्कृतज्ञता ॥</p> <p>अन्वयः – पिता..... बाल्ये महत् यच्छति, अस्य किं तपः तेपे इति तत्कृतज्ञता ।</p> <p>मञ्जूषा-</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 5px; width: fit-content; margin: 10px auto;"> <p>पिता, उक्तिः, विद्याधनम्, पुत्राय</p> </div> <p>अथवा</p> <p>मञ्जूषायाः साहाय्येन श्लोकस्य भावार्थं रिक्तस्थानानि पूरयित्वा पुनः लिखत -</p> <p>य इच्छत्यात्मनः श्रेयः प्रभूतानि सुखानि च । न कुर्यादहितं कर्म स परेभ्यः कदापि च ॥</p> <p>भावार्थः –</p> <p>अस्य भावोऽस्ति यत् यः मानवः (i) कल्याणम् अधिकं च सुखम् (ii) , सः कदापि अन्येषां जनानां कृते अकल्याणकरं</p> | <p>$\frac{1}{2} \times 4 = 2$</p> <p>$\frac{1}{2} \times 4 = 2$</p> |

| | | |
|----|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------------------------|
| | (iii) न कुर्यात् अपितु सर्वदा (iv) कर्म कुर्यात् । मञ्जूषा इच्छति, कर्म, कल्याणकरम्, स्वकीयम् | |
| 9. | अधोलिखित-कथांशं समुचित-क्रमेण लिखत - (i) यद्यपि ग्रामस्य आरक्षी एव चौरः आसीत् । (ii) चौरः एव उच्चैः क्रोशितुमारभत- 'चौरोऽयं चौरोऽयम्' इति । (iii) चौरस्य पादध्वनिना प्रबुद्धोऽतिथिः चौरशङ्कया तमन्वधावत् अगृहणाच्च, परं विचित्रमघटत । (iv) विचित्रा दैवगतिः । तस्यामेव रात्रौ कश्चन चौरः गृहाभ्यन्तरं प्रविष्टः । (v) तत्क्षणमेव रक्षापुरुषः तम् अतिथिं चौरोऽयम् इति प्रख्याप्य कारागृहे प्राक्षिपत् । (vi) तस्य तारस्वरेण ग्रामवासिनः प्रबुद्धाः । (vii) तत्र निहितामेकां मञ्जूषाम् आदाय पलायितः । (viii) ग्रामवासिनः स्वगृहाद् निष्क्रम्य अतिथिमेव चौरं मत्वा अभर्त्सयन् । | $\frac{1}{2} \times 8 = 4$ |

-----0000-----